Toppersnotes
Unleash the topper in you

राजस्थान स्टेनोग्राफर

RAJ. STENOGRAPHER

राजस्थान कर्मचारी चयन आयोग (RSSB)

भाग – 3

सामान्य अध्ययन

SIERRA INNOVATIONS

विषय सूची

भारत का भूगोल

1. भारत की स्थिति एवं विस्तार, क्षेत्रफल 1
2. भारत के भौगोलिक भू-भाग 6
3. भारतीय मानसून 18
4. भारत का अपवाह तन्त्र एवं झीलें 20
5. भारत में प्राकृतिक वनस्पति 25
6. जैव विविधता एवं जैव संरक्षण 26
7. भारत की मृदा 34
8. भारत की जलवायु 36
9. भारत की खनिज सम्पदा 37
10. भारत के प्रमुख उद्योग 40
11. भारत का परिवहन तन्त्र 42
12. भारत में कृषि 47

राजस्थान का भूगोल

1. राजस्थान की उत्पत्ति, स्थिति, विस्तार एवं क्षेत्रफल 50
2. राजस्थान का भौतिक प्रदेश 54
3. राजस्थान का अपवाह तंत्र 63
4. राजस्थान की झीलें 70
5. राजस्थान की जलवायु 73
6. राजस्थान में मृदा संसाधन 78
7. राजस्थान में वन-संसाधन एवं वनस्पति 82
8. राजस्थान में खनिज सम्पदा 85
9. राजस्थान के ऊर्जा स्त्रोत 92

10.राजस्थान में पशुधन 99

11.राजस्थान में कृषि एवं सिंचाई परियोजनाएँ 103

12.राजस्थान की जनसंख्या 112

13.राजस्थान में वन्यजीव एवं संरक्षण 115

14.राजस्थान में उद्योग 119

राजस्थान का इतिहास

1. प्राचीन राजस्थान का इतिहास 123

- परिचय
- प्राचीन सभ्याताएँ

2. मध्यकाल राजस्थान का इतिहास 131

- प्रमुख राजवंश एवं उनकी विशेषताएं
- राजस्थान की रियासतें और अंग्रेजों के साथ संधियां

3. आधुनिक राजस्थान का इतिहास 166

- 1857 की क्रांति
- प्रमुख किसान आन्दोलन
- प्रमुख जनजातीय आन्दोलन
- प्रमुख प्रजामण्डल आन्दोलन
- राजस्थान का एकीकरण
- महिलाओं की राजनीतिक चेतना में भूमिका

4. राजस्थान कला एवं संस्कृति 178

- राजस्थान के त्यौहार
- राजस्थान के लोकदेवता
- राजस्थान की लोक देवीयाँ

- राजस्थान के लोक सन्त एवं सम्प्रदाय
- राजस्थान के लोकगीत
- राजस्थान की लोकगायन की शैलियाँ
- राजस्थान के संगीत
- राजस्थान के लोक नृत्य
- राजस्थान के लोकनाट्य
- राजस्थान के प्रमुख रीति रिवाज एवं प्रथाएं
- राजस्थान की जनजातियाँ
- राजस्थान की चित्रकला
- राजस्थान की हस्तकलाएँ
- राजस्थान का साहित्य एवं प्रकार
- राजस्थान की प्रमुख बोलियाँ

5. राजस्थान की स्थापत्य कला 217

- किले एवं स्मारक
- राजस्थान के जिले एवं धार्मिक स्थल
- राजस्थान की हवेलियाँ
- राजस्थान का पर्यटन
- राजस्थान के प्रमुख व्यक्तित्व
- राजस्थान का खान-पान एवं वेश-भूषा

6. राजस्थान की प्रमुख सामाजिक-आर्थिक विकास परियोजनाएं 236

7. राजस्थान की पंचायती राजव्यवस्था एवं प्रभाव 240

भारतीय भूगोल
(Indian Geography)

भारत का विस्तार–

- भारत की स्थिति उत्तरी गोलार्ध एवं पूर्वी देशांतर में है ।
- भारत की आकृति चतुष्कोणीय है ।
- भारत का अक्षांशीय विस्तार 8°4 से 37°6 उत्तरी गोलार्ध में है ।
- देशांतरीय विस्तार 68°7 से 97°25 पूर्वी देशांतर में है ।
- भारत का विश्व में क्षेत्रफल की दृष्टि से सातवां एवं जनसंख्या की दृष्टि से दूसरा स्थान है।

विश्व में स्थान	देश का नाम	
	क्षेत्रफल के अनुसार	जनसंख्या के अनुसार
प्रथम	रूस	चीन
द्वितीय	कनाडा	भारत
तृतीय	चीन	यू.एस.ए
चतुर्थ	यू. एस. ए.	इंडोनेशिया
पंचम	ब्राजील	ब्राजील
षष्ठ	ऑस्ट्रेलिया	पाकिस्ताान
सप्तम	भारत	नाईजीरिया
अष्टम	अर्जेनटीना	बांग्लादेश

- भारत का कुल क्षेत्रफल 32,87,263 वर्ग किमी है, जोकि विश्व के कुल क्षेत्रफल का 2.42% है ।
- भारत में विश्व की कुल जनसंख्या का 17.5% हिस्सा निवास करता है ।
- उत्तर से दक्षिण विस्तार 3214 किमी है और पूर्व से पश्चिम में विस्तार 2933 किमी है ।
- भारत का सबसे पूर्वी बिंदु अरुणाचल प्रदेश में वलांगु (किबिथू) है।
- सबसे पश्चिमी बिंदु गुजरात में गोरमाता सक्रिय (कच्छ जिला) में है ।
- सबसे उत्तरी बिन्दु इन्द्रा कॉल है, जो कि केन्द्र शासित प्रदेश लेह में स्थित है ।
- सबसे दक्षिणतम बिन्दु इन्दिरा पॉइंट है, इंदिरा पॉइंट को पहले पिग्मेलियन पॉइंट और पार्सन्स पॉइंट के नाम से जाना जाता था। इन्दिरा पॉइंट निकोबार द्वीप समूह में स्थित है। इसकी भूमध्य रेखा से दूरी 876 किमी है ।
- प्रायद्वीपीय भारत का सबसे दक्षिणी भाग तमिलनाडु में केप कोमोरिन (कन्याकुमारी) में स्थित है।
- भारत की स्थल सीमा की लम्बाई 15200 किमी है ।
- तटीय भाग की लम्बाई है 7516 किमी (द्वीप समूह मिलाकर)। केवल भारतीय प्रायद्वीप की तटीय सीमा 6100 किमी है ।
- भारतीय मानक समय रेखा 82°30 पूर्वी देशांतर पर है। मानक समय रेखा 5 राज्यों से होकर गुजरती है ।
  - उत्तर प्रदेश (मिर्जापुर)
  - छत्तीसगढ
  - मध्य प्रदेश
  - आंध्र प्रदेश
  - ओडिशा
- भारतीय मानक समय और ग्रीनविच समय के बीच अंतर 5.30 घण्टे का है । भारतीय समय ग्रीनविच समय से आगे चलता है ।
- सर्वाधिक राज्यों की सीमा को छूने वाला भारतीय राज्य उत्तर प्रदेश है। उत्तर प्रदेश कुल 9 राज्यों से सीमा बनाता है ।
  - उत्तराखण्ड
  - हरियाणा
  - दिल्ली
  - हिमाचल प्रदेश
  - राजस्थान
  - मध्य प्रदेश
  - छत्तीसगढ
  - झारखण्ड
  - बिहार

- भारत के कुल 9 राज्य एवं – केन्द्र शासित प्रदेश समुद्री तट से लगे हुए हैं।
  - गुजरात
  - महाराष्ट्र
  - गोवा
  - कर्नाट
  - केरल
  - तमिलनाडु
  - अरूणाचल प्रदेश
  - उडीसा
  - पश्चिम बंगाल

- केन्द्र शामित प्रदेश
  - लक्षद्वीप
  - अण्डमान निकोबार
  - दमन और दीव
  - पुदुच्चेरी (पांडिचेरी)

- हिमालय को छूने वाले 11 राज्य व 2 केन्द्र शासित प्रदेश हैं।

राज्य
  - हिमाचल प्रदेश
  - उत्तराखण्ड
  - सिक्किम
  - अरुणाचल प्रदेश
  - नागालैंड
  - मणिपुर
  - मिजोरम
  - त्रिपुरा
  - मेघालय
  - असम
  - पश्चिम बंगाल

केंद्र शासित प्रदेश
  - जम्मू कश्मीर
  - लेह

- भारत के 8 राज्यों से होकर कर्क रेखा गुजरती है।
  - गुजरात
  - राजस्थान
  - मध्य प्रदेश
  - छत्तीसगढ
  - झारखण्ड
  - पश्चिम बंगाल
  - त्रिपुरा
  - मिजोरम
- भारत का सर्वाधिक नगरीकृत राज्य गोवा है ।
- भारत का सबसे कम नगरीकृत राज्य हिमाचल प्रदेश है ।
- भारत का मध्य प्रदेश सबसे अधिक वन वाला राज्य है ।
- भारत का हरियाणा सबसे कम वन वाला राज्य है ।
- भारत का मौसिनराम (मेघालय) में सबसे अधिक वर्षा होती है ।
- भारत के केन्द्र शासित प्रदेश लेह में सबसे कम वर्षा होती है ।
- अरावली पर्वत सबसे प्राचीन पर्वत श्रृंखला है ।
- हिमालय पर्वत सबसे नवीन पर्वत श्रृंखला है ।

भारत की अंतरराष्ट्रीय सीमाएं एवं पडोसी देश

- भारत की कुल 15200 किमी सीमा रेखा 92 जिलों और 17 राज्यों से होकर गुजरती है ।
- भारत की तटीय सीमा 7516 किमी है जोकि 9 राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों को स्पर्श करती है। केवल प्रायद्वीप भारत की तटीय सीमा रेखा 6100 किमी है ।
- भारत के मात्र 5 राज्य ऐसे है जो किसी भी अंतर्राष्ट्रीय सीमा रेखा और तट रेखा को स्पर्श नहीं करते हैं –
  - हरियाणा
  - मध्य प्रदेश
  - झारखण्ड
  - छत्तीसगढ
  - तेलंगाना

- भारतीय राज्यों में गुजरात की तट रेखा सर्वाधिक लंबी है। इसके बाद आंध्र प्रदेश की तट रेखा है ।
- त्रिपुरा तीन तरफ से बांग्लादेश से घिरा राज्य है ।
- भारत के 7 पडोसी देश भारत की थल सीमा को स्पर्श करते हैं –
  - पाकिस्तान – 3323 किमी
  - चीन – 3488 किमी
  - नेपाल – 1751 किमी
  - बांग्लादेश – 4096.7 किमी
  - भूटान – 699 किमी
  - म्यांमार – 1643 किमी
  - अफगानिस्तान – 106 किमी

- भारत की सबसे लंबी अंतर्राष्ट्रीय सीमा बांग्लादेश के साथ लगती है ।
- भारत सबसे छोटी अंतर्राष्ट्रीय सीमा रेखा अफगानिस्तान के साथ साझा करता है जोकि केवल 80 किमी है ।
- भारत के 2 पडोसी देश जो भारत की तटीय सीमा के साथ जुडे हुए हैं।
  1. श्रीलंका
  2. मालद्वीप
- ऐसे देश जो थल एवं जल दोनों सीमा बनाते हैं।
  - पाकिस्तान
  - बांग्लादेश
  - म्यांमार
- पाकिस्तान के साथ भारत के 3 राज्य एवं 2 केन्द्र शासित प्रदेश सीमा साझा करते हैं –

राज्य
1. पंजाब
2. राजस्थान
3. गुजरात

केन्द्र शासित प्रदेश
1. जम्मू कश्मीर
2. लेह

- चीन के साथ भारत के 4 राज्य एवं 2 केन्द्र शासित प्रदेश सीमा साझा करते हैं –

राज्य
1. हिमाचल प्रदेश
2. उत्तराखण्ड
3. सिक्किम
4. अरुणाचल प्रदेश

केन्द्र शासित प्रदेश
1. जम्मू कश्मीर
2. लेह

- नेपाल के साथ भारत के 5 राज्य सीमा साझा करते हैं –
1. उत्तराखण्ड
2. उत्तर प्रदेश
3. बिहार
4. सिक्किम
5. पश्चिम बंगाल

- भूटान के साथ भारत के 4 राज्य सीमा साझा करते हैं
1. पश्चिम बंगाल
2. सिक्किम
3. अरुणाचल प्रदेश
4. असम

- म्यांमार के साथ भारत के 4 राज्य सीमा साझा करते हैं –
1. अरुणाचल प्रदेश
2. नागालैण्ड
3. मणिपुर
4. मिजोरम

अफगानिस्तान के साथ भारत का एक केन्द्र शासित प्रदेश सीमा बनाता है – (केवल 80 किमी POK)
- लद्दाख

- पाक जलडमरूमध्य और मन्नार की खाडी श्रीलंका को भारत से अलग करती है। पाक जलडमरूमध्य को पाक जल संधि के नाम से भी जाना जाता है।
- मेकमोहन रेखा भारत और चीन के बीच में स्थित है । यह रेखा 1914 में शिमला समझौते में निर्धारित की गयी थी ।
- 1886 में सर डूरण्ड द्वारा भारत और अफगानिस्तान के बीच में डूरण्ड रेखा स्थापित की गई थी। परन्तु यह रेखा अब अफगानिस्तान एवं पाकिस्तान के मध्य है ।
- भारत और पाकिस्तान के बीच रेडक्लिफ रेखा है। रेडक्लिफ रेखा का निर्धारण 15 अगस्त, 1947 को सर सिरिल रैडक्लिफ की अध्यक्षता में सीमा आयोग द्वारा किया गया था ।

भारत में निवास करने वाली जनजातियाँ

भारत में निवास करने वाली जनजातियाँ – जनजातियाँ एक ऐसा मानव समूह है जोकि अपने आदिम रीति-रिवाज के तरीकों से एक निश्चित भू- भाग पर निवास करते हैं। भारतीय जनजातियों को भू-भाग के अनुसार उत्तर, पूर्वोत्तर, मध्य तथा दक्षिणीय क्षेत्र में वर्गीकृत किया गया है ।

- जनजातियों में धार्मिक पुरूष(पुजारी) को पाहन कहा जाता है ।
- अफ्रीका महाद्वीप को जनजाति महाद्वीप भी कहा जाता है ।
- भारत देश में सर्वाधिक जनजाति जनसंख्या वाला राज्य मध्य प्रदेश है उसके बाद महाराष्ट्र का स्थान है ।
- भारत देश में सर्वाधिक जनजाति प्रतिशत जनसंख्या वाला राज्य मिजोरम (94%) है।
- भारत देश में सर्वाधिक जनजाति प्रतिशत जनसंख्या वाला केन्द्र शासित प्रदेश लक्षद्वीप (94%) है ।
- भारत देश में न्यूनतम जनजाति जनसंख्या वाला राज्य गोवा तथा इसके बाद उत्तर प्रदेश का स्थान आता है ।
- पंजाब, हरियाणा, दिल्ली एवं चंडीगढ में कोई भी जनजातियां निवास नहीं करती है ।
- किसी भी जनजाति समुदायको अधिसूचित करने का अधिकार राष्ट्रपति के पास है ।

देश जनसंख्या के आधार पर सबसे बडे तीन जन जातीय समूह –
1. गोण्ड
2. भील
3. संथाल

राज्य	जनजाति का नाम	प्रमुख बातें
राज्य कश्मीर	गुज्जर	एक मुस्लिम जनजाति है ।
हिमाचल प्रदेश	गद्दी, बकरवाल, जद्दा, किन्नौर	1. पहाडी ढालों पर निवास करती है। 2. गद्दी तथा बकरवाल

		जनजाति बकरी तथा भेडों को पालती है तथा उन्हीं के उत्पादों पर आश्रित हैं ।
उत्तराखण्ड	थारू, बुक्सा, भोटिया, जौनसारी	थारू जनजाति के लोग दीपावली को शोक पर्व के रूप में मनाते हैं ।
उत्तर प्रदेश	कोई विशेष जनजातियाँ निवास नहीं करती हैं	हिमालय के तराई वाले क्षेत्रों में उत्तराखण्ड की ही जनजातियां निवास करती हैं ।
राजस्थान	मीणा, गरासिया, कालबेलिया	कालबेलिया एक सपेरा जनजाती समुदाय है ।
छत्तीसगढ	आगरिया, भारिया	कुछ मात्रा में मध्य प्रदेश की जनजातियाँ भी यहां निवास करती हैं ।
मध्यप्रदेश	कोल, भील, लम्बाडी, बैगा, सहरिया	बैगा जनजाति पूरी तरह से प्रकृति पर निर्भर रहती है ।

झारखण्ड	संथाल, मुण्डा, गोंड, बिरहोर, हो	1.स्वतंत्रता आंदोलन में बिरसा मुण्डा आंदोलन एक प्रमुख आंदोलन था । 2. मुण्डा जनजाति का प्रमुख त्यौहार सरहुल, बसंत आगमन पर मनाया जाता है । 3.मुण्डा जनजाति मृतकों की हड्डियाँ मिट्टी के बर्तन में रखी जाती है । इसे डंगटोपा अनुष्ठान कहा जाता है। 4.गोड जनजाति जंगलों को जलाकर, दहिया खेती करती है । 5.संथाल जनजाति की लेखन लिपी ओलाचिकी कही जाती है । 6. हो जनजाति के लोग वर्षा कराने हेतु आग जलाकर धुआँ करते है ।
पश्चिम बंगाल	भूमिज, लेप्चा	
महाराष्ट्र	कोली, बंजारा	
गुजरात	कोली, बंजारा, मुरिया	
आंध्र प्रदेश	चेंचू, लंबाडा, बहुरूपिया, कोचा	
तमिलनाडु	टोडा, मन्नार इरूला	1. टोडो जनजाति जोकि नीलगिरी की पहाडियों पर रहती है 2. टोडो

		जनजाति में कन्या वध की प्रथा के चलते, लिंग अनुपात में कमी आ गयी है। जिस कारण यहां बहुपति विवाह प्रचलित है।
केरल	कोटा, नायर, कडार	
आंडिशा	जुआंग, जटायु, उरांव	
सिक्किम	लेप्चा	
मेघालय	गारो, खासी, जयंतिया	
अरूणाचल प्रदेश	डफ्ला, मिरी, अबोर, मिश्मी	
नागालैण्ड	नागा, कोन्यक	नागा जनजाति में विवाह समारोह में नर मुण्ड माला को पहनकर शौर्यका प्रदर्शन करा जाता है।
मणीपुर	कूकी	
त्रिपुरा	लुशाई, रियांग	
दादर और नगर हवेली	ढोढिया	

Toppersnotes Unleash the topper in you

सीमावर्ती सागर :-

- सीमावर्ती सागर क्षेत्र आधार रेखा से 12**nm** तक स्थित है ।
- क्षेत्र में भारत का एकाधिकार है ।

1. संलग्न सागर :-

- संलग्न सागर क्षेत्र आधार रेखा से 24nm तक स्थित है ।
- इस क्षेत्र में भारत के पास वित्तीय अधिकार है ।

2. अनन्य आर्थिक क्षेत्र :-

- अनन्य आर्थिक क्षेत्र आधार रेखा से 200**nm** तक स्थित है ।
- इस क्षेत्र में भारत के पास आर्थिक अधिकार है तथा यहाँ भारत संसाधनों का दोहन, द्वीप निर्माण तथा अनुसंधान आदि कर सकता है ।
- उच्च सागर यहाँ सभी देशों का समान अधिकार होता है

भारत के भौगोलिक भू-भाग
(Physiography Devision of India)

भारत के भौगोलिक भू-भाग:-
1. हिमालयी पर्वतीय क्षेत्र
2. उत्तरी मैदान क्षेत्र
3. प्रायद्वीप पठार क्षेत्र
4. तटीय मैदान क्षेत्र
5. द्वीप समूह क्षेत्र

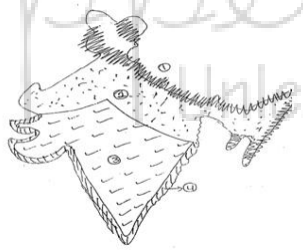

1. हिमालय पर्वतीय प्रदेश:-

- भारत के उत्तरी सीमा पर स्थित पर्वत तंत्र हिमालय पर्वतीय प्रदेश का निर्माण करता है ।
- इस पर्वत तंत्र का निर्माण नवीन वलित पर्वतों से हुआ है ।
- ये वलित पर्वत 'यूरेशियन प्लेट' तथा 'भारतीय प्लेट' के अभिसरण से निर्मित हुए है ॥
- यह पर्वत तंत्र विश्व का सबसे ऊँचा पर्वत तंत्र है, इसलिए इस तंत्र में बहुत से अल्पाइन हिमनद भी पाये जाते है ।
- इस पर्वतीय प्रदेश को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है:-

A. हिमालय :-

हिमालय पर्वतीय प्रदेश का सबसे उत्तरी भाग ट्रांस हिमालय कहलाता है ।

- यह मुख्य रूप से 'जम्मू-कश्मीर' व 'तिब्बत' में स्थित है ।
- इस भाग में तीन प्रमुख पर्वत श्रेणियाँ पाई जाती है:-
  (a) काराकोरम श्रेणी:-
  (b) लद्दाख श्रेणी:-
  (c) जास्कर श्रेणी:-

- ट्रांस हिमालय की सबसे उत्तरी श्रेणी।
- ट्रांस हिमालय की सबसे लम्बी व ऊँची श्रेणी है ।
- 'माउण्ट गोडविन ऑस्टिन' इस श्रेणी की सबसे ऊँची चोटी है, जो कि भारत की सबसे ऊँची तथा विश्व की दूसरी सबसे ऊँची चोटी है । (8611 किमी.)
  1. बतुरा
  2. हिस्पार
  3. बियाको
  4. बालतोरो
  5. सियाचिन

(b) लद्दाख श्रेणी

- काराकोरम श्रेणी के दक्षिण में स्थित।
- तिब्बत में इस श्रेणी का विस्तार 'कैलाश पर्वत' के नाम से जाना जाता है ।

(c) जास्कर श्रेणी:-

- ट्रांस हिमालय की सबसे दक्षिणी श्रेणी ।
- जास्कर तथा लद्दाख श्रेणी के मध्य सिन्धु घाटी स्थित है ।
- वृष्टि छाया क्षेत्र में स्थित होने के कारण इस पठार पर शुष्क परिस्थितियाँ पाई जाती है, इसलिए यह एक 'ठण्डे मरूस्थल' का उदाहरण है ।

B. मुख्य हिमालय:-

- यह पर्वतीय प्रदेश का दूसरा प्रमुख भाग है ।
- यह भाग सिन्धु नदी घाटी से ब्रह्मपुत्र नदी घाटी तक स्थित है ।
- यह लगभग 2400 किमी. की दूरी में विस्तृत है ।
- इस श्रेणी में विश्व की सबसे ऊँची चोटी माउण्ट एवरेस्ट (8848 मी.) स्थित है ।
- माउण्ट एवरेस्ट नेपाल-चीन सीमा पर स्थित है ।
- इसे नेपाल में सागरमाथा कहते है । (माउण्ट एवरेस्ट को)
- इस पर्वत पर बहुत से प्रमुख हिमनद स्थित है । **e.g.-** गंगोत्री, यमुनोत्री, सतोपंथ, पिंडारी, मिलान **etc.**

- वृहत हिमालय के प्रमुख दर्रेः-

  - बुर्जिला
  - जोजिला
  - बारालच्छा
  - शिपकिला
  - माना
  - नीति
  - लिपुलेख
  - नाथूला
  - जलीपला
  - बोमडिला

भारत में पाये जाने वाले दर्रों को दो भागों में बाँटा जा सकता है-

हिमालय के पर्वतीय राज्यों एवं केंद्र शासित प्रदेश में पाये जाने वाले दर्रे -

- केंद्र शासित प्रदेश - जम्मू कश्मीर
- राज्य - हिमाचल प्रदेश, उत्तराखण्ड, सिक्किम, अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर।

प्रायद्वीप भारत के राज्यों में पाये जाने वाले दर्रे -

- राज्य - महाराष्ट्र, केरल।
- जम्मू कश्मीर

यहां पर पांच महत्वपूर्ण दर्रे हैं -

काराकोरम दर्रा

- भारत का सबसे ऊँचा दर्रा है।
- समुद्र तल से ऊंचाई 565- मीå है।
- काराकोरम पर्वत श्रेणी में आता है।
- ये पाक के कब्जे वाले कश्मीर और चीन को जोडता है।

जोजिला दर्रा

- इसकी समुद्र तल से ऊंचाई 3528 मी. है।
- कश्मीर घाटी को लेह से जोडता है।
- जासकर (जास्कर) पर्वत श्रेणी में आता है।

पीरपंजाल दर्रा (पीर पंजाल दर्रा)

- इसकी समुद्र तल से ऊंचाई 3528 मी. है ।
- पीरपंजाल पर्वत श्रेणी में आता है ।
- पुलगाँव से कोठी जाने का रास्ता इसी पर है।

बनिहाल दर्रा

- इसकी समुद्र तल से ऊंचाई 2832 मी है ।
- पीरपंजाल पर्वत श्रेणी में आता है
- जम्मू और श्रीनगर को जोडता है ।
- जवाहर सुरंग इसी दर्रे में बनी है ।
- जम्मू से श्रीनगर जाने वाला ।-1ã है।

बुर्जिला दर्रा

- इसकी समुद्र तल से ऊंचाई 4100 मीå है।
- श्रीनगर को गिलगित से जोडता है।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

<u>हिमाचल प्रदेश</u>
यहां पर तीन महत्वपूर्ण दर्रे स्थित हैं-

<u>बारालाचा दर्रा (बरलाचा ला दर्रा)</u>
- इसकी समुद्र तल से ऊंचाई ७८४३ मीå ळें
- जासकर पर्वत श्रेणी में स्थित है।
- मंडी और लेह को जोडता है।

शिपकीला दर्रा (शिपकी ला या शिपकी दर्रा)
- इसकी समुद्र तल से ऊंचाई 4300 मी है।
- जासकर श्रेणी में स्थित है ।
- शिमला को तिब्बत से जोडता है ।
- सतलुज नदी भारत में इसी के पास से प्रवेश करती है।

<u>रोहतांग दर्रा</u>
- हिमाचल की पीरपंजाल श्रेणी में स्थित है।
- इसकी समुद्र तल से ऊंचाई 4620 मी. है।
- ये मनाली और लेह को आपस में जोडता है।

<u>उत्तराखण्ड</u>
यहां पर तीन महत्वपूर्ण दर्रे है -
लिपुलेख दर्रा
- उत्तराखण्ड के पिथौरागढ जनपद में 5334 मी की ऊंचाई पर स्थित है।
- ये पिथौरागढ को तिब्बत के तकलाकोट से जोडता है।
- यह दर्रा कैलाश मानसरोवर की यात्रा के लिए विशेष महत्व रखता है। यह दर्रा भारत से कैलाश पर्वत व

मानसरोवर जाने वाले यात्रियों द्वारा विशेष रूप से इस्तेमाल होता है। (माना दर्रा स्माणा दर्रा)

- उत्तराखण्ड के अंतिम गाँव माना (माणा) में स्थित ये दर्रा 5545 मी की ऊंचाई पर स्थित है ।

- उत्तराखण्ड के माना गाँव को तिब्बत से जोडता है ।

नीति दर्रा
- ये दर्रा 5068 मीå की ऊंचाई पर उत्तराखण्ड की महा हिमालय श्रेणियों में स्थित है ।
- ये उत्तराखण्ड को तिब्बत से जोडता है ।

सिक्किम
यहां दो प्रमुख दर्रे है । यहाँ दर्रे को ''ला'' भी कहा जाता है।

नाथू ला (दर्रा,) (नाथूला दर्रा)
- ये दर्रा सिक्किम राज्य में डोगेक्या श्रेणियों में 4310 मी की ऊंचाई पर स्थित है।
- ये दर्रा सिक्किम को चुम्भी घाटी से जोडता है।
- भारत–चीन की सीमा पर होने के कारण इसका सामरिक महत्व अधिक है ।
- 1962 के भारत–चीन युद्ध के बाद इसे बन्द कर दिया गया था। वर्ष 2006 में इसे व्यापार के लिए पुरा खोल दिया गया। भारत चीन
- व्यापार का कुल 80% व्यापार इसी दर्रे से किया जाता है ।

जेलेप ला दर्रा
- ये सिक्किम और भूटान को आपस में जोडता है ।
- इसकी समुद्र तल से ऊंचाई 4270å मी है ।
- इसका निर्माण तीस्ता (तीस्ता) नदी द्वारा किया गया है ।

अरूणाचल प्रदेश
यहां पर तीन प्रमुख दर्रे है –

बोमडिला दर्रा
- इसकी समुद्र तल से ऊंचाई 2217 मीå है।
- अरुणाचल प्रदेश के तवांग और तिब्बत को जोडता है ।
- तवांग में एक प्रसिद्ध बौद्ध मठ स्थित है।

यांग्याप दर्रा
- यह दर्रा भारत एवं तिब्बत की सीमा पर स्थित है।
- ब्रह्मपुत्र नदी भारत में इसी के पास से प्रवेश करती है ।

दीफू दर्रा
- अरुणाचल प्रदेश व म्यांमार के बॉर्डर पर है ।

मणीपुर

तुजू दर्रा
- इम्फाल को म्यांमार से जोडता है।

केरल
पालघाट दर्रा (पालक्काड दर्रा)
- इसकी समुद्र तल से ऊंचाई 300 मी है ।
- कोझिकोड (केरल) व कोयंबटूर (तमिलनाडु) को आपस में जोडता है ।
- अन्नामलाई व नीलगिरी की पहाडियों के बीच में है।

शेनकोट्टा
- ये इलायची पहाडियों (कार्डेमम या कार्दामोम हिल्स) में 210 मी की ऊंचाई पर स्थित है ।
- तिरुवनंतपुरम (केरल) और मदुरै (तमिलनाडु) को आपस में जोडता है ।

(a). मध्य हिमालय (Middle Himalaya):-
- इसे हिमाचल हिमालय या लघु हिमालय भी कहते है
- यह श्रेणी 2400 किमी. की दूरी में विस्तरत है ।
- इसकी औसत चौडाई 50 किमी. है ।
- मध्य हिमालय तथा वृहत हिमालय के बीच बहुत सी घाटियाँ स्थित है:–
  - कश्मीर घाटी = वृहत हिमालय – पीर पंजाल
  - कुल्लू घाटी = वृहत हिमालय – धौलाधार
  - कांगडा घाटी **(HP)** = वृहत हिमालय – मसूरी
  - काठमांडू घाटी = वृहत हिमालय – महाभारत

- इस श्रेणी पर ग्रीष्म ऋतु में शीतोष्ण कटिबन्धीय घास के मैदान पाए जाते है जिन्हें जम्मू कश्मीर में 'मर्ग' तथा उत्तराखण्ड मे 'बुग्याल, पयाला' कहा जाता है ।
- इस श्रेणी क्षेत्र में बहुत से पर्यटन स्थल पाए जाते है **e.g.** कुल्लू, मनाली, नैनीताल, मसूरी **etc.**

- इस श्रेणी में कुछ प्रमुख दर्रे पाए जाते है :–
  1 पीरपंजाल दर्रा:–यह दर्रा श्रीनगर को **POK** से जोडता है ।
  2 बनिहाल दर्रा:– श्रीनगर को जम्मू से जोडता है, **NH-1A** इस दर्रे से गुजरता है । इस दर्रे में जवाहर सुरंग स्थित है ।

- शिवालिक श्रेणी की ऊँचाई 500–1500 मी. के बीच पाई जाती है ।
- इसकी चौडाई 10–50 किमी. है ।

- शिवालिक को विभिन्न स्थानीय नामों से जाना जाता है:-
  - ➢ जम्मू और कश्मीर - जम्मू हिल्स
  - ➢ उत्तराखंड – दूदवा/धांग
  - ➢ नेपाल – चूडियाघाट
  - ➢ दाफला
  - ➢ मिरी
  - ➢ अबोर
  - ➢ मस्मी

- इन घाटियों को पश्चिमी हिमालय क्षेत्र में 'दून' तथा पूर्वी हिमालय क्षेत्र में 'द्वार' कहते है ।
  e.g.- देहरादून, कोटलीदून, पाटलीदून, हरिद्वार, निहांगद्वार **etc.**

चोस **(Chos):-**

- हिमाचल प्रदेश तथा पंजाब में स्थित शिवालिक श्रेणी क्षेत्र में मानसून के दौरान अस्थायी धाराओं का निर्माण होता है, जिन्हे । स्थानीय भाषा में चोस कहते है ।
- यह धाराएँ शिवालिक को विभिन्न भागों में विभाजित कर देती है ।

C. पूर्वांचल **(Purvanchal):-**

- उत्तर-पूर्वी राज्यों में उत्तर से दक्षिण की ओर विस्तृत पहाडियों को पूर्वांचल कहते है ।
- पूर्वांचल का निर्माण इण्डो-ऑस्ट्रेलियन तथा बर्मा प्लेट के अभिसरण से हुआ है ॥
- यह बालू पत्थर से निर्मित पहाडियाँ है ।
- दक्षिण-पश्चिम मानसून पवनों द्वारा यहाँ भारी वर्षा प्राप्त होती है अतः यहाँ बहुत अधिक जैव-विविधता पाई जाती है ।
- यह विश्व के 36 **Hotspots** में सम्मिलित है ।
- नागा पहाडियों की सबसे ऊँची चोटी सरामती है ।
- मिजो पहाडियों को लुसाई पहाडियाँ भी कहते है ।
- मिजो पहाडियों की सबसे ऊँची चोटी ब्लू माउण्टेन है
- बराइल श्रेणी नागा पहाडियों एवं मणिपुर पहाडियों को अलग करती है ।

हिमालय पर्वतीय प्रदेश का प्रादेशिक विभाजनः–

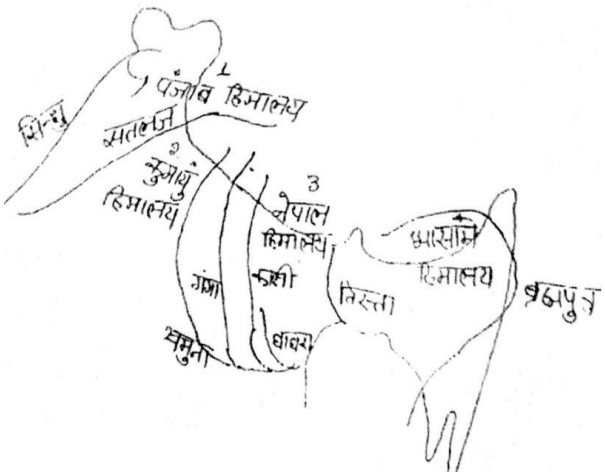

(a). कश्मीर/पंजाब हिमालय **(Kashmir/Punjab Himalaya):-**

- कश्मीर/पंजाब हिमालय का यह भाग सिंधु तथा सतलज नदी के बीच स्थित है ।
- यह लगभग 560 किमी. की दूरी में विस्तृत है ।
- इस भाग में जास्कर, पीरपंजाल श्रेणी एवं जम्मू पहाडियाँ स्थित है ।

(b). कुमायूँ हिमालय **(Kumao Himalaya):-**

- हिमालय का यह भाग सतलज से काली नदी के बीच स्थित है ।
- यह 320 किमी. की दूरी में विस्तृत है ।
- यह भाग मुख्य रूप से उत्तराखण्ड में स्थित है ।

(c). नेपाल हिमालय **(Nepal Himalaya):-**

- यह भाग काली तथा तिस्ता नदी के बीच स्थित है।
- यह भाग 800 किमी. की दूरी में विस्तृत है।

(d). असम हिमालय **(Assam Himalaya):-**

- यह भाग तिस्ता से दिहांग नदी के बीच स्थित है ।
- यह 720 किमी. की दूरी में विस्तृत है ।
- यहाँ हिमालय की चौडाई सबसे कम हो जाती है जो लगभग 150 किमी. हो जाती है ।

2. उत्तरी मैदानी प्रदेशः–

- ➢ इस मैदानी प्रदेश का निर्माण नदियों द्वारा जमा किए गए अवसादों से होता है ।
- ➢ यह विश्व के सबसे विस्तृत जलोढ मैदान है ।
- ➢ यह भारत का नवीनतम प्रदेश है ।

- इस अत्यधिक उपजाऊ मैदान का उपयोग कृषि के लिए किया जाता है तथा यहाँ सर्वाधिक जनसंख्या घनत्व पाया जाता है ।
- इस मैदानी प्रदेश की चौडाई लगभग 240-320 किमी. पाई जाती है ।

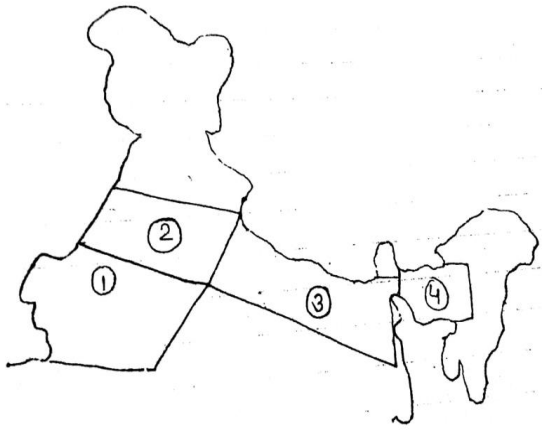

1. <u>मैदान:-</u>

- सिन्धु-गंगा-ब्रह्मपुत्र मैदान की उत्पत्ति क्वार्टनरी या महाकल्प के प्लीस्टोसीन तथा होलोसीन कल्प में हुई । टेथिस भू-सन्नति के निरन्तर संकरा एवं छिछला होने तथा हिमालयी नदियों के द्वारा लाए गए अवसादों के निक्षेपण से मैदानी भाग का निर्माण हुआ यह मैदान स्तरित बालुका चीका मिट्टी के निक्षेपों तथा जैविक मलबे से बना है । मैदान के उत्तरी भाग जलोढों के नीचे असंगठित शिवालिक अवसाद तथा पुराने भू-भाग के नीचे गोण्डवाना जैसे पुराने स्थलरूप हैं ।
- सिंधु-गंगा-ब्रह्मपुत्र के मैदान की विशिष्ट भू-गर्भिक स्थिति ने कुछ विशेष भौगोलिक लक्षणों को निर्मित किया है, जिसमें बांगर, खादर, भूड भाबर तथा तराई प्रमुख हैं ।
- बाँगर पुरानी जलोढ वेदिकाएँ हैं, इसकी उत्पत्ति ऊपरी प्लीस्टोसीन युग में हुई । चम्बल एवं मध्य यमुना घाटी इसके प्रमुख उदाहरण हैं । 'खादर' हल्के रंग की नवीन जलोढक है, जिसमें चूना पदार्थ की कमी होती है । यह अधिक उपजाऊ होती है । यह बाढ ग्रसित क्षेत्र होता है । समानरूप वाले भूड निक्षेप एक प्रकार का मध्यवर्ती ढाल है, जो पुरानी बाँगर उच्च भूमि और युवा निम्न खादर मैदानों के बीच स्थित है । यह भूड निक्षेप मुरादाबाद तथा बिजनौर जिले में पाया जाता है ।
- भाबर प्रदेश के शिवालिक के गिरिपाद प्रदेश में सिंधु नदी से लेकर तिस्ता नदी तक पाया जाता है । गिरिपाद क्षेत्र में होने के कारण यहाँ बडी मात्रा में कंकर-पत्थर, बजरी आदि का निक्षेपण होता है । यहाँ कंकर-पत्थर, बजरी के निक्षेपण के कारण पारगम्य चट्टानों का निर्माण हो जाता है । अतः यहाँ नदियाँ भूमिगत होकर अदृश्य हो जाती हैं । यह क्षेत्र कृषि हेतु अनुपजाऊ है ।
- भाबर के दक्षिण में तराई प्रदेश एक दलदली क्षेत्र होता है । इसमें भाबर में विलुप्त नदियाँ यहाँ पुनः प्रकट होकर प्रवाहित होती हैं । अधिक नमी के कारण यहाँ घने वन एवं वन्य प्राणी पाए जाते हैं ।
- मैदानों के प्रादेशिक वितरण के अन्तर्गत राजस्थान का मैदान, पंजाब, हरियाणा का मैदान, गंगा का मैदान (जिसे तीन भागों में ऊपरी, मध्य तथा निम्न भागों) एवं ब्रह्मपुत्र का मैदान प्रमुख हैं ।
- राजस्थान के मैदानों को दो भागों में बाँटा जाता है , जिसमें मरूस्थली और बाँगर क्षेत्र शामिल हैं । मरूस्थलीय भाग में बालुका स्तूप अधिक पाए जाते हैं । बाँगर प्रदेश के जिन भागों पर अधिक सिंचाई की जाती है वहाँ पर कहीं-कहीं एक नमकीन परत जम जाती है, जिसे रेह या कल्लर कहा जाता है ।
- पंजाब-हरियाणा का मैदान दोआब से निर्मित है । दो नदियों के क्षेत्र को दोआब कहते हैं । व्यास तथा सतलज के बीच बिस्ट दोआब, व्यास एवं रावी के बीच बारी दोआब, रावी एवं चिनाव के बीच रचना दोआब, चिनाब तथा झेलम के बीच चाज दोआब तथा झेलम-चिनाब एवं सिंधु के बीच सिन्ध-सागर दोआब है ।
- मध्य गंग का मैदान पूर्वी उत्तर प्रदेश से लेकर बिहार तक विस्तृत है । यह मैदान काफी नीचा है । इसकी प्रमुख नदियों में घाघरा, गण्डक, कोसी प्रमुख हैं । ये सभी नदियाँ गंगा की सहायक नदियाँ हैं । कोसी नदी अपने मार्ग प्रतिरूप परिवर्तन के लिए कुख्यात है और इसलिए इसे बिहार में बिहार का शोक कहा जाता है ।
- निम्न गंगा के मैदान का विस्तार उत्तर में दार्जिलिंग हिमालय के गिरिपाद से लेकर दक्षिण में बंगाल की खाडी तक है तथा पूर्व में छोटानागपुर पठार से पश्चिम में असम एवं बांग्लादेश की सीमा तक है । निम्न गंगा के मैदान के पूर्वी भाग में ब्रह्मपुत्र से मिलने वाली नदियों में तिस्ता, तोरसा तथा पश्चिम भाग में गंगा (पद्मा-भागीरथ) की सहायक नदियाँ, जैसे-महानन्दा, पूर्वभाबा, द्वारकेश्वर, रूपानारायण इत्यादि प्रवाहित होती हैं ।
- ब्रह्मपुत्र के मैदान का विस्तार पूर्व में सदिया से लेकर पश्चिम में धुबरी तक (लगभग 720 किमी लम्बा) है । यह उत्तर में सीमान्त भ्रंश एवं दक्षिण में नागाक्षेप द्वारा सीमांकित है । यहाँ ढाल प्रवणता के कम होने के कारण ब्रह्मपुत्र एक अत्यधिक गुंफित नदी हो गई है, जिसमें कई नदीय द्वीप बन गए है । इसी में माजुली द्वीप विश्व का सबसे बडा नदी द्वीप है ।
- भू-आकृतिक विशेषताओं के आधार पर प्रायद्वीपीय उच्च भूमि को कई उपविभागों में बाँटा गया है ।

यहाँ कई पहाडियाँ, नदियाँ तथा छोटे-छोटे पठार भी पाए जाते हैं ।

3. प्रायद्वीपीय पठारी प्रदेश:-

- यह भारत के दक्षिण प्रायद्वीप में स्थित पठारी प्रदेश है ।
- यह भारत का सबसे पुराना भौगोलिक प्रदेश है, जो कि 'गोंडवाना लैण्ड' का भाग हुआ करता था।
- क्षेत्रफल के आधार पर यह भारत का सबसे बडा भौगोलिक प्रदेश है ।
- यह भारत का सबसे बडा भौतिक प्रदेश जो 16,00000 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र मे विस्तृत है ।
- इस पठारी प्रदेश की ऊंचाई लगभग 600 से 900 मीटर पाई जाती है ।
- इस प्रदेश में मिलने वाले प्रमुख पठार निम्न है -

(a). मेवाड पठार:-

- अरावली के पूर्व में स्थित पठार।
- इस पठार पर 'बनास नदी' बहती है ।

(b). मध्य भारत पठार:-

- मेवाड पठार के पूर्व में स्थित है ।
- इस पठार पर 'चम्बल नदी' बहती है, तथा बीहडों का निर्माण करती है ।

(c). बुन्देलखण्ड पठार:-

- मध्य भारत पठार के दक्षिण-पूर्व में स्थित है ।
- यह पठार दक्षिणी उत्तरप्रदेश तथा उत्तरी मध्यप्रदेश में स्थित है ।
- इस पठार पर से केन तथा बेतवा नदियाँ (गंगा की सहायक नदी) बहती है, जो कि गहरी घाटियों तथा जल प्रपातों का निर्माण करती है ।

(d). मालवा पठार:-

- अरावली श्रेणी, मेवाड पठार, मध्य भारत पठार, बुन्देलखण्ड पठार तथा विन्ध्याचल पर्वतों के मध्य स्थित 'त्रिभुजाकार पठार' है ।
- इस पठार के उत्तरी भाग में चम्बल नदी बहती है तथा दक्षिणी भाग में नर्मदा नदी बहती है ।

(e). बघेलखण्ड पठार:-

- मुख्य रूप से मध्यप्रदेश व छत्तीसगढ राज्य में स्थित।
- यह पठार सोन अपवाह तंत्र को महानदी अपवाह तंत्र से अलग करता है ।

(f). छोटा नागपुर पठार:-

- झारखण्ड राज्य में स्थित पठार
- यह भारत का सर्वाधिक खनिज सम्पन्न क्षेत्र है, जहाँ लौह अयस्क व कोयले (बिटुमिन्स, जिसे गोंडवाना कोयला भी कहते हैं) के सबसे बडे भण्डार पाये जाते है ।
- इस पठार पर से 'दामोदर नदी' बहती है, जो कि उसे दो भागों में विभाजित करती है- दामोदर नदी के उत्तर में स्थित भाग 'हजारीबाग पठार' तथा दक्षिण में स्थित भाग 'रांची पठार' कहलाता है ।
- इस पठार में स्थित दामोदर नदी की घाटी कोयले के भंडारों के लिए विख्यात है ।

(g). मेघालय पठार:-

- मेघालय राज्य में स्थित पठार जिसे 'छोटा नागपुर पठार' का ही विस्तार माना जाता है ।
- इस पठार पर गैरो **(Garo)**, खासी तथा जयन्तियाँ पहाडियाँ स्थित है ।
- खासी पहाडियों में मॉसिनराम व चेरापूंजी नामक स्थान स्थित है, जहाँ विश्व में सर्वाधिक मात्रा में वार्षिक वर्षा प्राप्त की जाती है ।

(h). दण्डकारण्य पठार:-

- दक्षिणी छत्तीसगढ तथा पश्चिमी उडीसा में स्थित पठार।
- इस पठार के छत्तीसगढ में स्थित भाग को 'बस्तर का पठार' भी कहा जाता है ।
- इस पठार पर भारत के सबसे बडे 'बॉक्साइट के भण्डार' पाये जाते है ।
- इस पठार पर से 'इन्द्रावती नदी' बहती है ।
- बस्तर पठार क्षेत्र में लौह अयस्क की विख्यात खान दल्लीराजहरा **(Dalli Rajhara)** छत्तीसगढ में स्थित है

(i). करबीआंगलोंग पठार:-

- यह पठार असम में स्थित है ।
- इस पठार पर मिकिर तथा रेंगमा पहाडियाँ स्थित है ।

(j). दक्कन पठार:-

- दक्षिण भारत में स्थित त्रिभुजाकार पठार
- इस पठार पर लावा की परत मिलती है, जिसके अपक्षय से इस क्षेत्र में काली मिट्टी का निर्माण हुआ है
- यह मिट्टी कपास की खेती के लिए अत्यधिक उपयुक्त है तथा यह पठारी क्षेत्र भारत का सबसे बडा कपास उत्पादक क्षेत्र है ।

- इस पठार का ढाल पश्चिम से पूर्व दिशा की ओर है तथा इस पर दक्षिण भारत की प्रमुख नदियाँ गोदावरी, कृष्णा, कावेरी बहती है ।

प्रायद्वीपीय प्रदेश के पर्वत

महान जल विभाजक :-

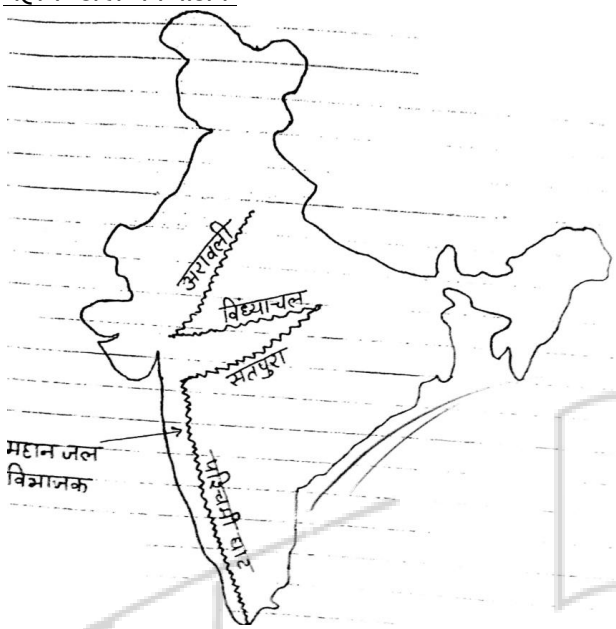

(a). अरावली पर्वतः-

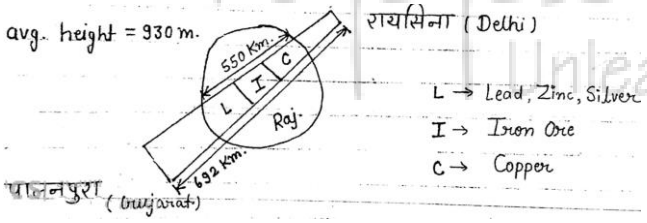

- यह पर्वत गुजरात में पालनपुर से दिल्ली की रायसीना पहाडियों तक विस्तृत है ।
- यह प्राचीन वलित पर्वत है ।
- यह 692 किमी. की दूरी में विस्तृत है तथा इसका अधिकतम भाग राजस्थान में (550 किमी.) है ।
- इस पर्वत की औसत ऊँचाई 930 मी. है ।
- गुरू शिखर इसकी सबसे ऊँची (1722 मी.) चोटी है
- यह महान जल विभाजक का एक भाग है ।

(b). विन्ध्याचलः-

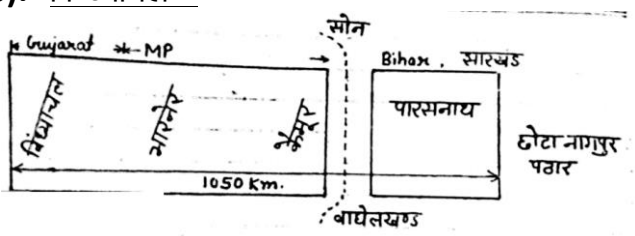

- यह एक खण्ड पर्वत है ।
- यह पर्वत चूना पत्थर से निर्मित है ।
- यह श्रेणी उत्तरी तथा दक्षिणी भारत को अलग करती है
- यह श्रेणी नर्मदा भ्रंश घाटी की उत्तरी सीमा का निर्माण करती है ।
- यह लगभग 1050 किमी. की दूरी में गुजरात से छोटा नागपुर पठारी क्षेत्र तक विस्तृत है ।

(C) सतपुडा :-

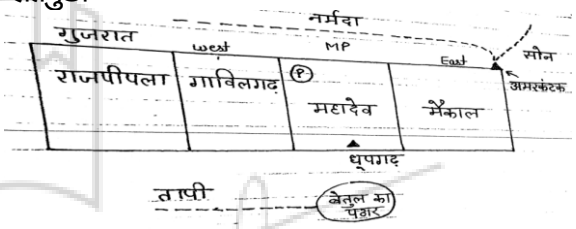

- यह एक खण्ड पर्वत है ।
- यह नर्मदा भ्रंश घाटी की दक्षिणी सीमा तथा तापी भ्रंश घाटी की उत्तरी सीमा का निर्माण करता है ।
- यह बालूपत्थर से निर्मित पर्वत है ।
- यह मुख्य रूप से मध्यप्रदेश तथा गुजरात में स्थित है
- महादेव पहाडियों में सतपुडा की सबसे ऊँची चोटी धूपगढ स्थित है । (1350 मी.)
- महादेव पहाडियों में ही पंचमढी स्थित है ।
- महादेव पहाडियों के दक्षिण में बेतुल का पठार स्थित है जहाँ से तापी नदी का उदगम होता है ।
- मैकाल पहाडियों की सबसे ऊँची चोटी अमरकंटक है जहाँ से सोन तथा नर्मदा नदी का उदगम होता है ।

(d) पश्चिमी घाट :-

- यह तापी घाटी से कन्याकुमारी तक विस्तृत है ।
- यह लगभग 1600 किमी. की दूरी में विस्तृत है तथा इसकी औसत ऊँचाई 1200 किमी. है ।
- इसे सह्यादी पर्वत भी कहते है ॥
- दक्षिण पश्चिमी मानसून पवनों द्वारा इस पर्वत पर भारी वर्षा प्राप्त होती है अतः यहाँ ऊष्ण कटिबन्धीय सदाबहार वनस्पति पाई जाती है ।

(i). उत्तरी सह्याद्रीः–

* यह भाग तापी घाटी से 16°**N** के बीच स्थित है ।
* यह मुख्य रूप से महाराष्ट्र में स्थित है ।
* इस भाग की सबसे ऊँची चोटी कलसुबाई है जिससे 'गोदावरी नदी' का उद्गम होता है ।
* यहाँ की अन्य प्रमुख चोटी 'महाबलेश्वर' है ।
* महाबलेश्वर चोटी से 'कृष्णा नदी' का उद्गम होता है

(ii). मध्य सह्याद्रीः–

* यह 16°**N** से नीलगिरी पहाडियों के बीच स्थित है
* यह मुख्य रूप से गोवा तथा कर्नाटक में स्थित है ।
* इस भाग की सबसे ऊँची चोटी कुद्रेमुख है ।
* कुद्रेमुख चोटी लौह अयस्क के भण्डार के लिए विख्यात है ।
* यहाँ बाबा बुदन पहाडियाँ भी पाई जाती है जो कहवा **(Coffee)** के उत्पादन के लिए विख्यात है ।

(iii). दक्षिणी सह्याद्रीः–

* दक्षिणी सह्याद्री नीलगिरी पहाडियों तथा कन्याकुमारी के बीच स्थित है ।
* इस भाग में तीन प्रमुख पहाडियाँ स्थित है :–

I. अन्नामलाई पहाडियाँ **(Annamalai Hills):–**

- इन पहाडियों की सबसे ऊँची चोटी अनाईमुडी **(Annaimudi)** (2695 मी.) केरल में है ।
- अनाईमुडी दक्षिण भारत की सबसे ऊँची चोटी है ।

II. इलायची पहाडियाँ **(Cardamom Hills):–**

- यह पहाडियाँ मसाले की खेती के लिए विख्यात है (मुख्य रूप से इलायची के लिए)
- इन पहाडियों की सबसे ऊँची चोटी अगस्थ्यमलाई **(Agasthyamalai)** है । यह एक जैव आरक्षित क्षेत्र भी है ।

III. पालानी पहाडियाँ **(Palani Hills):–**

- इन पहाडियों में तमिलनाडु का विख्यात पर्वतीय क्षेत्र (**Hill Station**) कोडाईकनाल **(Kodaikanal)** स्थित है ।

पश्चिमी घाट के दर्रेः–

1. थालघाटः– **Mumbai – Nasik (NH3)**
2. भोरघाटः– **Mumbai – Pune (NH4)**
3. पालघाटः– **Kochi – Coimbatore (NH47)**
4. सेनकोटाः– **Tiruvananthapuram – Madurai (NH49)**

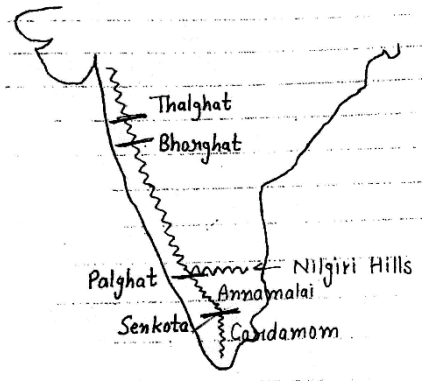

पूर्वी घाट :–

- यह एक महानदी से नीलगिरी पहाडियों के बीच विस्तृत है ।
- इसकी औसत ऊँचाई 900 मी. है ।
- यह पर्वत महानदी से गोदावरी नदी तक सतत् है तथा उसके बाद यह पर्वत नदियों द्वारा अपरदित हो जाता है
- इसकी सबसे ऊँची चोटी अरामाकोंडा (आन्ध्रप्रदेश) है (1680 मी.)
- यहाँ की अन्य प्रमुख चोटी महेन्द्रगिरी (उडीसा) तथा जिन्दागाढा (आन्ध्रप्रदेश) है ।

नीलगिरी पहाडियाँ

- यह पहाडियाँ कर्नाटक, केरल तथा तमिलनाडु के सीमा क्षेत्र पर स्थित है ।
- इस पर्वत की सबसे ऊँची चोटी दोदाबेटा है । (2637 मी.)
- यह दक्षिण भारत की दूसरी सबसे ऊँची चोटी है ।
- इन पहाडियों पर पूर्वी तथा पश्चिमी घाट आकर मिलते है ।
- इन पहाडियों पर टोडा जनजाति निवास करती जो भैंसपालन के लिए विख्यात है ।

4. तटवर्ती मैदानी प्रदेशः–

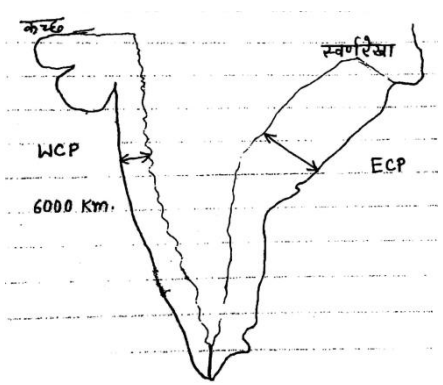

- भारत के तटवर्ती क्षेत्रों में स्थित मैदानी प्रदेश 'तटवर्ती मैदानी प्रदेश' कहलाते है ।
- यह कच्छ प्रायद्वीप से लेकर स्वर्ण रेखा नदी तक लगभग 6000 किमी. की लम्बाई में स्थित है ।
- इन तटवर्ती मैदानी प्रदेश को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है ।

(i). पश्चिमी तटवर्ती मैदान

(ii). पूर्वी तटवर्ती मैदान

(a). पश्चिमी तटवर्ती मैदानः–

- भारत के पश्चिमी तट कच्छ प्रायद्वीप से लेकर कन्याकुमारी तक स्थित है ।
- पश्चिमी तटवर्ती क्षेत्र से बहने वाली नदियाँ मुख्य रूप से नदमुखों का निर्माण करती है, जिसके कारण उस क्षेत्र में मिलने वाले तटवर्ती मैदानों की चौडाई कम पाई जाती है ।
- पश्चिमी तटवर्ती मैदानों का निम्न प्रादेशिक भागों में विभाजित किया जा सकता हैः–

(i). कच्छ मैदानः–

* कच्छ प्रायद्वीप में स्थित समतल एवं चौडे तटवर्ती मैदान
* इनका निर्माण 'सिन्धु' तथा उसकी सहायक नदी द्वारा जमा किये गये अवसादों से हुआ है ।
* इस क्षेत्र में आने वाले ऊँचे ज्वारों के कारण यहाँ मिलने वाली मिट्टी में लवणों की सान्द्रता अधिक पाई जाती है, इसलिए यह क्षेत्र कृषि की दृष्टि से अनुपजाऊ है ।

(ii). काठियावाड मैदानः–

* काठियावाड प्रायद्वीप के तटीय क्षेत्रों में मिलने वाले मैदान ।
* यह संकरा मैदानी क्षेत्र है, जिसका निर्माण प्रायद्वीप के मध्य भाग में स्थित माण्डम पहाडियों से निकलने वाली नदियों द्वारा जमा किये गये अवसादों से होता है ।

(iii). गुजरात के मैदानः–

* गुजरात के दक्षिण तटीय क्षेत्र में स्थित ।
* इनका निर्माण साबरमती, माही, नर्मदा तथा तापी नदियों द्वारा किया गया है ।
* यह क्षेत्र अत्यधिक उपजाऊ है, तथा इसका उपयोग कृषि के लिए किया जाता है ।

(iv). कोंकण मैदानः–

* महाराष्ट्र तथा गोवा के तटीय क्षेत्र में स्थित मैदानी प्रदेश ।
* यह एक संकरा तथा पथरीला क्षेत्र है ।
* इस क्षेत्र में नारियल, आम, काजू की खेती होती है
* इस क्षेत्र में होने वाली मानसून पूर्व आने आनी वाली वर्षा 'आम्र वर्षा' कहलाती है, जो कि आम की खेती के लिए अत्यधिक लाभदायक है ।

(v). कन्नड मैदानः–

* कर्नाटक के तटीय क्षेत्रों में स्थित ।
* पश्चिमी घाट से आने वाली नदियाँ जल प्रपातों का निर्माण करने के पश्चात इन मैदानी क्षेत्रों में जाकर गिरती है ।
* 'शरावती नदी' इन क्षेत्रों में जॉग प्रपात/गेरोसोपा जल प्रपात /महात्मा गांधी जल प्रपात का निर्माण करती है
* इस क्षेत्र मे होने वाली मानसून पूर्व वर्षा 'चेरी ब्लोस्म' कहलाती है जो कि कॉफी की फसल के लिए लाभदायक है ।

(vi). मालाबार मैदानः–

* ये मैदान मुख्य रूप से केरल में स्थित है ।
* यह चौडे मैदान है तथा इनके तटवर्ती क्षेत्रों में लैगून झीलें पाई जाती है जिन्हें स्थानीय भाषा में केयाल **(Kayal)** कहते है ।
* यहाँ की प्रमुख झीलें है ।:–

e.g.- वेम्बानाड**(Vembanad)**

e.g.- अष्ठामुडी**(Asthamudi)**

e.g.- पुन्नामादा **(Punnamada) -** यहाँ प्रतिवर्ष नेहरू ट्रॉफी वल्लमकाली नौका दौड होती है ।

(b). पूर्वी तटवर्ती मैदानः–